RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.06 | No.12 | December 2021 | pp. 144-151
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

Historical survey of temples of Modinagar
मोदीनगर के मन्दिरों का ऐतिहासिक सर्वेक्षण

[1]Dr. Krishnakant Sharma and *[1]Anchal

[1]*Associate Professor (History Department), Multanimal P.G. College, Modinagar, Ghaziabad, U.P.*
[2]*Research Scholar (History Department), Multanimal P.G. College, Modinagar, Ghaziabad, U.P.*

Abstract in English

Modinagar, situated on the Delhi-Meerut Road, is an important city in the Ghaziabad district of western Uttar Pradesh. Which was established in October 1933. But earlier this city was known as Begumabad. Apart from being an ancient city, Modinagar itself boasts of many historical heritages, in which historically temples have an important place. All these temples represent the Nagara style of North Indian architecture. While surveying the temples in Modinagar area, it was found that some temples built by Marathas are also located here, in which Shiv Bada Temple, Sanatan Dharma Mandir and Shiv Mandir on Saunda Road are located. Which have been rebuilt and along with historical monuments, these temples remain the center of religious, social and cultural faith. Some other ancient temples are also located in this area, in which there are Shiva temple located in Kaderabad, temple of sage Valmiki ji, Shri Laxmi Narayan temple etc., which in themselves represent the example of North Indian temple architecture, all these temples are carriers of Indian culture. Is. In which not only religious works are done, but while discharging social responsibilities, this temple has remained the center of religious and cultural faith of the people.

Keywords: *Temple, Historicity, Modinagar, Architecture, Culture, Faith Garbha-griha, Quadrangular, Statues, Shikhar, Tree, Complex, Amalaka*

Abstract in Hindi

दिल्ली–मेरठ सड़क मार्ग पर बसा हुआ मोदीनगर पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जनपद गाजियाबाद का एक महत्वपूर्ण शहर है। जिसकी स्थापना अक्टूबर 1933 को हुई थी। परन्तु इससे पूर्व यह शहर बेगमाबाद के नाम से जाना जाता था। पुरातन शहर होने के साथ ही मोदीनगर अपने आप में बहुत–सी ऐतिहासिक धरोहरो को समेटे हुए हैं जिनमें ऐतिहासिक दृष्टि से मन्दिरों का महत्वपूर्ण स्थान है। यह सभी मन्दिर उत्तर भारतीय स्थापत्य कला नागर शैली का प्रतिनिधित्व करते है। मोदीनगर क्षेत्र में मन्दिरों का सर्वेक्षण करते हुए पाया कि यहाँ पर मराठो के द्वारा बनवाये गये कुछ मन्दिर भी स्थित है जिसमें शिव बाड़ा मन्दिर, सनातन धर्म मन्दिर एवं सौंदा रोड स्थित शिव मन्दिर है। जिनका पुर्ननिर्माण कर दिया गया है व ऐतिहासिक स्मारकों के साथ–साथ धार्मिक सामाजिक और सांस्कृतिक आस्था के केन्द्र ये मन्दिर बने हुए है। कुछ अन्य पुरातन मन्दिर भी इस क्षेत्र में स्थित है जिनमें कादराबाद स्थित शिव मन्दिर, ऋषि वाल्मीकि जी का मन्दिर, श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर आदि है जो कि अपने आप में उत्तर भारतीय मन्दिर स्थापत्य कला का उदाहरण प्रस्तुत करते है ये सभी मन्दिर भारतीय संस्कृति के वाहक है। जिनमें न सिर्फ धार्मिक कार्यो को सम्पन्न दिया जाता है बल्कि सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए यह मन्दिर लोगों की धार्मिक व सांस्कृति आस्था के केन्द्र बने हुए है।

मुख्य शब्द: *मन्दिर, ऐतिहासिकता, मोदीनगर, स्थापत्य कला, संस्कृति, आस्था गर्भ–गृह, चतुष्कोणीय, मूर्तियाँ, शिखर, वृक्ष, परिसर, आमलक, आदि।*

Article Publication

Published Online: 15-Dec-2021

***Author's Correspondence**

Anchal

Research Scholar (History Department), Multanimal P.G. College, Modinagar, Ghaziabad, U.P.

anchalgautam222[at]gmail.com

© 2021The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

मोदीनगर, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जनपद गाजियाबाद का एक शहर, जो कि 28^{0}50 उत्तरी अंक्षांश और 77^{0}35 पूर्व देशान्तर में, गाजियाबाद के उत्तर–पूर्व में लगभग 27 किमी0 की दूरी पर दिल्ली–मेरठ सड़क मार्ग पर बसा हुआ है। 2011 की जनगणना के अनुसार मोदीनगर की जनसंख्या 1,30,325 है जिनमें 53 प्रतिशत पुरूष व 47 प्रतिशत स्त्रियाँ है औसत साक्षरता दर 77.43 प्रतिशत है।

स्व0 रायबहादुर गुजरमल मोदी जी ने 16 अक्टूबर 1933 को इसी नगर में (तब बेगमाबाद के नाम से जाना जाता था) चीनी मिल की स्थापना की थी चीनी मिल की स्थापना के बाद ही मोदी जी के नाम पर ही इस क्षेत्र का नाम 1942 में मोदीनगर पड़ा।[1] 1942 तक यह क्षेत्र बेगमाबाद के नाम से जाना जाता था जिसमें समीप के ग्राम बेगामाबाद, बुदाना, सीकरी खुर्द, बिसोखर आदि आते थे। वर्तमान में मोदीनगर शहर उत्तर प्रदेश के औद्योगिक नगरों में गिना जाता है क्योंकि शुगर मिल के पश्चात अन्य उद्योगों कपड़ा मिल, तेल मिल आदि का विस्तार होता रहा।

भारत एक आध्यात्मिक देश है। यहाँ पर ईश्वर की अराधना के निमित्त अनेक मन्दिरों का समय–समय निर्माण हुआ। श्री के0आर0 निवासन के शब्दों में अनेक वस्तुओं तथा अति मानवीय प्रतिमान तथ्यों की पूजा की परम्परा एक निश्चित स्थान पर और निश्चित विद्या से करने की परम्परा मानव समाज में अति प्राचीन काल से प्रचलित रही है।

भारत में मन्दिर निर्माण सम्बन्धी विविध उल्लेख प्राचीन साहित्य में उपलब्ध है पुरातत्वीय अवशेषों में मन्दिरों के प्रारूप, प्राचीन मूर्तियों, सिक्को, मुद्राओं आदि में देखने को मिलते हैं इन स्वरूपों को देखने से ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में मन्दिर या देवायतन सीधे–सादे रूप में बनाये जाते थे। प्रकृत रूप से कुछ ऊँचे स्थान पर प्रतिमा स्थापित की जाती थी उसके चारों ओर वेदिका या बाडा का निर्माण होता था। बाद में वेदिका को ऊपर से भी आच्छादित किया जाने लगा। कालान्तर में कलात्मक अभिरूचि के वृद्धि के साथ–साथ मन्दिर वास्तु का स्वरूप भी संवर्द्धित होता गया है। मूर्ति स्थापना के स्थल पर गर्भ–गृह को परिवेष्टित करने के अतिरिक्त उसके बाहर चारों ओर प्रदक्षिणपथ की उद्भावना हुई। गर्भगृह के बाहर आच्छादित प्रवेश द्वार या मुख–मण्डप का निर्माण हुआ। गुप्तकाल तक मन्दिर वास्तु के व्यापक शास्त्र का निर्माण हो गया था। उसके आधार पर मन्दिर के विभिन्न अंग–उपांग निर्धारित हुए धीरे–धीरे गर्भगृह के ऊपर शिखर तथा बाहर मण्डप, अर्द्धमण्डप, महामण्डप आदि का विधान हुआ मन्दिर वास्तु को शास्त्र के आधार पर अत्यन्त विकसित रूप प्रदान किया गया। ईसवी छठी शती से लेकर मुगलकाल तक भारत के विभिन्न भागों में विविध धर्मो से सम्बन्धित मन्दिरों की रचना हुई। समय तथा स्थान के आधार पर इन मन्दिरों की शैलियों में भेद–प्रभेद होने स्वाभाविक थे।

मन्दिर के उद्भव की चर्चा करते हुए यह निष्कर्ष निकाला गया है कि एक विशिष्ट विधा बनने के पहले एक प्रकार से उन आवासों व प्रसादों की प्रतिकृति रहे जो कि भारत के प्राचीन जन अपने निवास के लिए प्रयुक्त करते रहे।

गुप्तकाल तक भारतीय मन्दिर वास्तुकला दो परम्पराओं के रूप में विकसित हो चुकी थी। एक थी उत्तर भारत की विश्वकर्मा परम्परा तथा दूसरी दक्षिण भारत की मय परम्परा।

मत्स्य पुराण दोनों परम्पराओं के प्रमुख आचार्यो की सूची प्रस्तुत करते हुए भृगु, अति, वशिष्ठ, विश्वकर्मा, मय, नारद, शुक्र तथा बृहस्पति का वास्तु आचार्यो के रूप में उल्लेख करता है।[2]

मय वास्तुकला को एक अनार्य वास्तुकला के रूप में स्थापना मिली यह धारणा प्रकट की गई कि असुर एवं द्रविड़ वास्तु परम्परा ही मय परम्परा है। मय परम्परा के आदि आचार्यो में, आचार्य नग्नजित का उल्लेख प्रमुख्य रखता है।[3]

दोनों ही वास्तु पद्धतियों में आचार्यो ने महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा शिल्पशास्त्र के अनेक ग्रन्थों का निर्माण हुआ।

तारापद भट्टाचार्य इन आचार्यो की ऐतिहासिकता पर विभिन्न दृष्टियों पर विचार करते हुए यह निष्कर्ष निकालते है कि विश्वकर्मा की परम्परा ही कालान्तर में नागर शैली के रूप में विकसित हुई।[4]

नागर शैली का प्रसार हिमालय से लेकर विंध्यपवर्तमाला तक देखा जा सकता है। इस शैली के मन्दिरों की पहचान आधार से लेकर सर्वोच्च अंश तक इसका चतुष्कोणीय होना है। मन्दिर में गर्भगृह, उसके समक्ष क्रमशः अन्तराल, मण्डप, अर्द्धमण्डप होते है एक ही अक्ष पर एक–दूसरे से संलग्न इन भागों का निर्माण किया जाता है। शिल्पशास्त्र के अनुसार इस शैली के आठ प्रमुख अंग है।

(i) मूल आधार – जिस पर सम्पूर्ण भवन खड़ा किया जाता है।
(ii) मसूरक – नीव व दीवारों के बीच का भाग होता है।
(iii) जंघा – दीवारें (विशेषकर गर्भगृह की दीवारे)
(iv) कपोत – कार्निस

(v) शिखर – मन्दिर का शीर्षभाग अथवा गर्भगृह का ऊपरी भाग
(vi) ग्रीवा – शिखर का ऊपरी भाग
(vii) वर्तुलाकार आमलक – शिखर के शीर्ष पर कलश के नीचे का भाग
(viii) कलश – शिखर का शीर्षभाग

चित्र–1

नागर शैली का क्षेत्र उत्तर भारत में नर्मदा नदी के उत्तरी क्षेत्र तक है परन्तु यह कही–कही अपनी सीमाओं से आगे भी विस्तारित हो गयी है। परमार शासकों ने वास्तुकला के क्षेत्र में नागर शैली को प्रधानता देते हुए इस शैली में मन्दिर बनवाएँ। 7वीं शताब्दी से लेकर 13वीं शताब्दी के मध्य तक ओडिशा में नागर शैली अंतर्गत एक विशिष्ट मन्दिर शैली का विकास हुआ। इस शैली के अधिकांश मन्दिर प्राचीन भुवनेश्वर में केन्द्रित है। दो अन्य मन्दिर जिसमें कोणार्क का सूर्य मन्दिर व पुरी का जगन्नाथ मन्दिर यहाँ से कुछ किमी0 की दूरी पर स्थित हैं। ओडिशा में ही परशुरामेश्वर मन्दिर, लक्ष्मणेश्वर मन्दिर, रामेश्वर मन्दिर, लिंगराज मन्दिर आदि है। बुन्देलखण्ड के चन्देल नरेशों के शासनकाल में उत्तर भारतीय नागर शैली अपने शीर्ष बिन्दुओं को प्राप्त हुई। खजुराहों के मन्दिर इसके अद्वितीय उदाहरण है। चन्देल राजाओं ने खजुराहों में 84 मन्दिरों का निर्माण कराया था परन्तु वर्तमान में केवल 30 मन्दिर ही बचे हैं। खुजराहों के मंदिर में अन्दर और बाहर दोनों स्थानों पर मूर्ति सज्जाएँ है और अत्यन्त सुन्दर ढंग से बनाई गई कलश वाली छतें भी है।

इस प्रकार नागर शैली के अन्तर्गत उत्तर भारत में अनेक स्थानों पर अनेकों मन्दिरों का निर्माण कराया गया तथा यह शैली अपने चरमोत्कर्षता को प्राप्त हुई। नागर शैली में योजना तथा ऊँचाई को मापदण्ड रखा गया है। नागर शैली के अन्तर्गत उत्तर भारत में अनेक स्थानों पर अनेकों मन्दिर का निर्माण कराया गया।

मोदीनगर के मन्दिर

मोदीनगर क्षेत्र में ऐतिहासिकता की दृष्टि से अनेक मन्दिर स्थित है जिनका वर्णन इस शोध पत्र में किया गया है। स्थापत्य कला की दृष्टि से ये सभी मन्दिर नागर शैली में ही बने हुए हैं जिनमें मण्डप, शिखर उरूश्रृंग, आमलक, कलश आदि मन्दिर स्थापत्य के लगभग सभी अंग विद्यमान दिखाई देते है।

मोदीनगर के मन्दिरों में जिसमें शिव बाड़ा, सौन्दा रोड स्थित शिव मन्दिर एवं सनातन धर्म मन्दिर पुरातन है जिनको मराठाओं के द्वारा निर्मित कराया गया। अन्य मन्दिर भी लगभग 80–90 वर्ष प्राचीन है। सभी मन्दिरों में लगभग 18–20 वर्ष बाद पुरानी मूतियों एवं शिवलिंग का विसर्जन कर नयी मूर्तियों व शिवलिंग को स्थापित किया जाता है।

शिव बाड़ा मन्दिर– मोदीनगर की कस्बा रोड़ पर स्थित यह एक शिव मन्दिर है जिसका निर्माण मराठा रानी बालाबाई ने कराया था।[5] मन्दिर के साथ ही एक कुएँ का निर्माण भी कराया गया जो आज भी उसी स्वरूप में स्थित है। इसमें लखौरी ईटों का प्रयोग किया गया है। साथ ही एक पीपल का वृक्ष भी लगाया गया था। मन्दिर का परिसर लगभग 1000–1200 गज का है। पहले मन्दिर के सामने एक तालाब हुआ करता था जिसका वर्तमान में भराव कर दिया गया है। जब मराठा रानी बालाबाई ने इस शिव मन्दिर का निर्माण कराया था तब इसे बालाबाई शिव मन्दिर ही कहा जाता था लेकिन वर्तमान में इसका नाम शिव बाड़ा मन्दिर हो गया क्योंकि इस स्थान को बाड़ा कहा जाता है।

शिव बाड़ा मन्दिर चतुष्कोणीय है। मन्दिर के गर्भगृह के ऊपर शिखर बना हुआ है जिस पर आमलक व आमलक के ऊपर कलश स्थित है। कलश के ऊपर एक ध्वज को स्थापित किया गया है। शिखर के साथ ही उरूश्रृंग भी बने हुए है। मन्दिर के गर्भगृह में शिवलिंग है जिसके चारों और शिव परिवार है जिनमें माता पार्वती, गणेश जी, कार्तिकेय व नन्दी विराजमान है। शिव परिवार एवं शिवलिंग को एक सफेद संगमरमर के अष्टकोणीय पत्थर के ठीक मध्य में स्थापित किया गया है।

गर्भगृह के ठीक सामने दीवार पर माता पार्वती व शिव की प्रतिमा स्थापित की गई है जो अत्यन्त ही सुन्दर है। वर्तमान में शिव मन्दिर के अतिरिक्त मन्दिर परिसर में अन्य देवी–देवताओं के मन्दिर भी स्थापित है जिनका निर्माण बाद में किया गया है। मुख्य शिव मन्दिर के दाई तरह देखेगे तो हम काली माँ, हनुमान जी एवं रामदरबार के सुन्दर मन्दिर दिखाई देते है वही बाई तरफ श्री साई नाथ एवं दुर्गा माँ के सुन्दर मन्दिर बने है। दुर्गा माता के मन्दिर के ठीक सामने शनिदेव का मन्दिर स्थित है। शनिदेव मन्दिर के पीछे ही पीपल का वृक्ष स्थित है मन्दिर में कोई पुरातन शिलालेख नहीं मिला है लेकिन जिन्होंने मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया है वह लेख मंदिर पर अंकित है जिसमें लिखा है कि इस मन्दिर का जीर्णोद्धार श्रीमती रामवती देवी धर्मपत्नी श्री नवल किशोर गुप्ता ने अपने स्व0 पिता श्री बनवारी लाल जी भट्टेवाले की यादगार में कराया संवत् 2041 (1984 ई0 में)।

शिवरात्रि के अवसर पर मन्दिर को विशेष रूप से सजाया जाता है एवं पूजा की जाती है। जन्मोत्सव व विवाहोत्सव के अवसर पर भी मन्दिर में कुआँ पूजन होता है।

सनातन धर्म मन्दिर– मोदीनगर की गुरूद्वारा रोड़ के नजदीक स्थित यह एक शिव मन्दिर है। 18 वी शताब्दी में मराठें यहाँ पर अपना पड़ाव डालते थे एवं तभी इस मन्दिर का निर्माण मराठाओं द्वारा कराया गया था।[6] इस स्थान को आज भी पड़ाव के नाम से जाना जाता है। मन्दिर परिसर लगभग 1200 गज में है। यह मुख्यतयाः शिव मन्दिर है। मन्दिर का आधार ऊँचा है एवं इसी आधार पर मन्दिर स्थित है। मुख्य शिव मन्दिर का शिखर प्राचीन ही है। जो मराठाओं के समय का ही निर्मित है। इसमें कोई बदलाव नहीं किया गया है। शिखर को गेरूएँ रंग से रंगा गया है एवं उरूश्रृंग बने हुए है। शिखर के बिल्कुल सामने की ओर सूर्य देवता बने हुए है। शिखर के ऊपर आमलक बना हुआ है। आमलक के चारो तरफ नेत्र बन्द हुई एक पुरूष आकृति बनी हुई है जिसके बालों को लम्बा बनाया गया है। आमलक के ऊपर कलश स्थापित है।

वर्तमान में सम्पूर्ण मन्दिर को सफेद संगमरमर से बनाया गया है। 'मन्दिर में प्रवेश करते ही बिल्कुल सामने की ओर खिलते हुए कमल में गणेश जी विद्यमान दिखाई देते है फिर पीछे की ओर अन्य सभी मन्दिर स्थित है। मुख्य शिव मन्दिर के गर्भगृह में शिवलिंग के साथ ही सम्पूर्ण शिव परिवार को स्थापित किया गया है साथ ही सामने की ओर शिव–पार्वती की प्रतिमा स्थापित की गई है। सम्पूर्ण मन्दिर को छत से आच्छादित कर दिया गया है। इसी कारण मन्दिर का शिखर भी सामने से नहीं दिखाई देता है। शिखर देखने के लिए भी सीढ़ियों से होकर ऊपर छत पर जाना होता है तब मुख्य शिखर दिखाई देता है। मन्दिर को पूर्ण रूप से आच्छादित करने के साथ ही परिसर में अन्य मन्दिरों का निर्माण भी कराया गया है मुख्य शिव मन्दिर के दाई और श्री लक्ष्मी–नारायण मन्दिर है जिस पर एक लेख अंकित है इसमें लिखा है कि ''श्री रामेश्वर दयाल कंसल एवं पत्नि श्रीमती दयावती कंसल ने पूज्य माता–पिता स्व0 श्रीमती रामकली एवं स्व0 बाबू लाल कंसल की स्मृति में अपने पुत्र श्री राकेश कंसल के सहयोग से मन्दिर का निर्मा कराया दिनांक 31 जनवरी 1999 दिन रविवार''। दाई ओर ही महाकाली का मन्दिर स्थित है जिसमें एक बड़ी प्रतिमा स्थापित है। शिव मन्दिर के बाई तरफ विश्वकर्मणे का मन्दिर है। जिसकी मूर्ति की स्थापना पूज्य राष्ट्रसन्त ''पदमभूषण'' वीतराग श्री स्वामी कल्याणदेव महाराज जी के कर कमलो द्वारा श्रीमती बसन्ती देवी ने अपने पति स्व0 श्री गंगाप्रसाद की पुण्य स्मृति में पुत्रों के सहयोग से 27 मई 2001 में रविवार के दिन कराई।

शिव मन्दिर के दाई ओर ही दुर्गामाता के मन्दिर का जीर्णोद्धार श्रीमती जगवती देवी पत्नि स्व0 श्री सीताराम ने 07–02–2000 को कराया था लेकिन इस मन्दिर में मूर्ति की स्थापना श्री हरिकृष्ण जायसवाल ने अपने पिता रामचन्द्र जायसवाल व माता रामकुंवर की पुण्य स्मृति में 17.05.1974 को करवाई थी।

सम्पूर्ण मन्दिर का संचालन व रख–रखाव महेश तायल की अध्यक्षता वाली कमेटी के द्वारा किया जाता है। कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर मन्दिर में झाँकी निकाली जाती है। सामाजिक कार्य के रूप में मन्दिर द्वारा सीता माँ की रसोई के नाम से सिर्फ 10 रू0 में पेट भर भोजन हर रोज प्रदान किया जाता है।

शिव मन्दिर– मोदीनगर की सौन्दा रोड़ पर स्थित यह मन्दिर भी मराठाओं द्वारा ही निर्मित कराया गया था। मन्दिर की स्थापना के साथ ही एक कुँआ भी निर्मित कराया गया जो आज भी स्थित है।[7] वर्तमान में मन्दिर परिसर लगभग 2 बीघा में स्थित है तथा यहाँ अन्य देवी देवताओं के मन्दिर भी बना दिये गये है।

मन्दिर की कला देखे तो नागर शैली में यह मन्दिर बना हुआ है। चतुष्कोणीय मन्दिर, जिसके गर्भगृह के ऊपर शिखर स्थित है शिखर से संलग्न ही उरूश्रृंग है। शिखर के ऊपर आमलक बना हुआ है। आमलक के ऊपर कलश स्थापित है तथा उसके ऊपर एक त्रिशूल को स्थापित किया हुआ है।

मुख्य शिव मन्दिर के दाई एवं बाई ओर क्रमशः राधाकृष्ण मन्दिर व दुर्गा माता का मन्दिर स्थित है इन दोनो ही मन्दिरों का शिखर मुख्य शिखर से कुछ छोटा है। मुख्य शिवमन्दिर के गर्भगृह में शिव परिवार को स्थापित किया गया है। जिसमें नन्दी का अभाव है क्योकि नन्दी को दाई तरफ एक कोने में अलग से स्थापित किया गया है। शिव पार्वती प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा स्व0 पं0 नानक चन्द शर्मा पुत्र श्री हर प्रसाद शर्मा निवासी बेगमाबाद की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी व पुत्रों के द्वारा दिनांक 12–02–10 में शिवरात्रि को कराई गई थी। मन्दिर में जो कुँआ स्थित है वर्तमान में इसका प्रयोग विवाहोत्सव व जन्मोत्सव के अवसर पर कुँआ पूजन के लिए किया जाता है।[8]

प्राचीन शिव मन्दिर– यह मन्दिर मोदीनगर–मेरठ रोड़ पर स्थित कादराबाद में है। इस मन्दिर का निर्माण 70–80 वर्ष पूर्व कराया गया था। स्थानीय जानकारी के अनुसार इस मन्दिर का निर्माण पृथ्वी नाम के एक व्यक्ति द्वारा कराया गया था।[9] वहीं पर एक कुएँ का निर्माण भी कराया उस समय वहाँ एक बाग हुआ करता था। जब 1970 के दशक में यहाँ चकबन्दी हुई तो इस मन्दिर को अपनी जमीन दे दी गई एवं मन्दिर का विकास किया गया वर्तमान में शिव मन्दिर परिसर लगभग 600–700 गज में है। मन्दिर का निर्माण चतुष्कोणीय है। गर्भगृह के ऊपर शिखर से उरूश्रृंग सलंग्न है। इस मन्दिर में आमलक का अभाव है। लेकिन कलश को स्थापित किया गया है एवं सबसे ऊपर त्रिशूल लगाया गया है। गर्भगृह में चतुष्कोणीय पत्थर के अन्दर शिवलिंग को स्थापित किया गया है एवं सामने दीवार पर शिव–पार्वती की प्रतिमा स्थापित है। गर्भग्रह के बाहर ऊँचे चबूतरे पर नन्दी को स्थापित किया गया है।

शिव–शक्ति मन्दिर पर एक लेख अंकित है जिसमें लिखा है कि मन्दिर का जीर्णोद्धार श्रीमती कमला देवी ने अपने पति स्व0 श्री नम्मामल कर्दम की याद में करवाया व शिव परिवार की मूर्तियों की स्थापना इनके पुत्र रामनिवास कर्दम व पुत्रवधु सीमा कर्दम द्वारा सम्पन्न हुआ। प्राण–प्रतिष्ठा श्री राजेश कुमार नेगी माता बंग्ला मुखी उपासक द्वारा हुई।

वाल्मीकि मन्दिर– भारतीय परम्परा में देवी–देताओं के साथ–साथ ऋषि व सन्तों के पूजन की परम्परा भी रही है इसी परम्परा का निर्वहन करते हुए वाल्मीकि समाज ने ऋषि वाल्मीकि के मन्दिर का निर्माण मोदीनगर की फफराना रोड़ पर किया है। इस

मन्दिर का निर्माण 14 अप्रैल 1938 को शुरू हुआ एवं 1942 तक बनकर यह तैयार हो गया। इस मन्दिर का निर्माण एवं प्रबन्ध बाबा ब्रह्मलीन परमपूज्नीय गुरूदेव हरिशाह महाराज, लोशाह महाराज एवं प्रथम महामंडेश्वर सन्तोषशाह महाराज द्वारा किया गया था। भारत एवं भारत से बाहर के कई देशों जैसे कनाडा, इंग्लैण्ड, जर्मन, अमेरिका में रहने वाले वाल्मीकि समुदाय के लोगों से दान लेकर ही इस मन्दिर का निर्माण कराया गया एवं वर्तमान में भी इसकी व्यवस्था को इसी प्रकार चलाया जाता है।[10] मन्दिर का निर्माण सुजानशाह महाराज के 14 अप्रैल 1938 को समाधि लेने के बाद शुरू किया गया था। सुजानशाह महाराज ने वाल्मीकि रामायण का प्रचार–प्रसार पूरे भारत व कई अन्य देशों में किया। इनकी कर्मभूमि चित्तभवन इटावा के पास है एवं मोदीनगर वाल्मीकि मन्दिर में इनकी समाधि स्थित है। मन्दिर परिसर लगभग 2000 गज में है। मन्दिर निर्माण में सफेद पत्थर का प्रयोग किया गया है। मुख्य मन्दिर के ऊपर शिखर स्थित है। शिखर से उरूश्रृंग संलग्न है। मन्दिर के गर्भगृह में श्री वाल्मीकि ब्रह्म की प्रतिमा स्थापित की गई है एवं मन्दिर की दीवारों पर चारों तरफ रामायण के दृश्य अंकित किये हुए है व सभी महाराज जिसमें सुजानशाह, खाकशाह, इल्लूशाह, पन्नाशाह, हरिशाह व लोशाह महाराज को भी चित्रित किया गया है।

श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर (मोदी मन्दिर)– यह मन्दिर दिल्ली–मेरठ राजमार्ग–58 पर स्थित है जो कि मोदीनगर के बीचो–बीच से निकलता है। इस मन्दिर का निर्माण मोदी उद्योग के संस्थापक रायबहादुर गुजरमल मोदी जी ने 3 फरवरी 1963 को बसंत पंचमी के दिन कराया था। गुजरमल मोदी जी की धर्मपत्नी दयावती मोदी जी ने ऐसे भव्य मन्दिर के निर्माण की इच्छा व्यक्त की थी। गुजरमल मोदी जी ने श्री श्री 108 कृष्णाश्रम महाराज जी को अपना गुरू माना एवं मन्दिर की मूर्तियों की प्राण–प्रतिष्ठा हेतु हिमालय से इन्हें आमंत्रित किया। अपने सम्पूर्ण जीवन में कृष्णाश्रम महाराज जी सिर्फ दो बार हिमालय से नीचे उतरे। ये हिमालय में गंगोत्री धाम में दिगम्बर के रूप में (निर्वस्त्र) जमीन के अन्दर रहते थे। वर्तमान में यहाँ राधाकृष्ण का मन्दिर बन गया। कृष्णाश्रम महाराज लगभग 150 वर्ष तक जीवित रहे एवं अपना शरीर छोड़ने से 50 वर्ष पूर्व तक यह मौन रहे थे।[11] इनके अलावा श्री श्री आनंदमयी माँ, श्री हरिबाबा, कृष्णानंद गोविंदानंद जी अन्य संत महात्मा पधारे थे।

यह मन्दिर पूरा लाल बलुआ पत्थर से बना हुआ है जिसके अन्दर श्वेत संगमरमर व अन्य पत्थरों का प्रयोग किया गया है। मन्दिर की शैली उत्तर भारतीय (नागर शैली)है। मुख्य मन्दिर लक्ष्मी–नारायण जी का है एवं मुख्य मन्दिर के गर्भगृह के ऊपर शिखर बना हुआ है जोकि सबसे ऊँचा शिखर है अन्य दो शिखर मुख्य मंदिर के शिखर से छोटे है तीनों शिखर के ऊपर आमलक व कलश बने हुए है। मुख्य शिखर पर रजत छत्र चढ़ा हुआ है व बाकी दोनों शिखरों पर रजत त्रिशूल सुशोभित है। दिल्ली के बिडला मन्दिर से कुछ–कुछ मेल खाते हुए इस मन्दिर की भव्यता देखते ही बनती है मुख्य मन्दिर समूह से दाई और हनुमान जी का मंदिर हे जिसमें उनकी विशाल व भव्य मूर्ति स्थापित है इससे लगा हुआ ही श्री रामदरबार का मंदिर है। मुख्य मन्दिर के बाईं ओर यज्ञशाला बनी हुई है जिससे लगा हुआ भगवान वेंकटेश्वर का मन्दिर स्थित हैं। मन्दिर के आगे श्वेत संगमरमर का खुला प्रांगण है। इसके आगे सरोवर है जिसमें फव्वारे लगे हुए है व एक विशाल पीतल की पनघट

से दो घड़ें ले जाती हुई मूर्ति लगी है। मन्दिर के बाई ओर एवं सामने की तरफ बगीचे हैं। मंदिर के दक्षिण की ओर एक बहुत ही बड़ा लाल पत्थर का सुन्दर रामलीला मंच निर्मित है जिसमें एक हजार दर्शक बैठकर रामलीला का आनन्द ले सकते हैं। शिवरात्रि, कृष्णजन्माष्टमी, दशहरा आदि पर्वो पर मन्दिर को बहुत सुन्दर सजाया जाता है जिससे मन्दिर बहुत ही भव्य व आकर्षित दिखाई देता है।

मोदीनगर में इन मन्दिरों के अतिरिक्त भी अनेक मन्दिर बनाये गये है जिनमें महादेव मन्दिर, रविदास मन्दिर, जैन मन्दिर व आर्य समाज मन्दिर, शिव मन्दिर, हनुमान मन्दिर है। परन्तु ये सभी नवनिर्मित मन्दिर है इसलिए इन मन्दिरों का उल्लेख इस शोध पत्र में नहीं किया गया है। प्राचीन काल से ही भारतवर्ष में मन्दिर धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आस्था के केन्द्र रहे है। इन्हीं मन्दिरों में भारतीय संस्कृति के दर्शन होते है। मोदीनगर स्थित ये मन्दिर भी भारतीय संस्कृति के वाहक है इन मन्दिरों के सर्वेक्षण से यह पता चलता है कि मन्दिर ऐतिहासिक स्मारकों के साथ–साथ धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आस्था के प्रमुख केन्द्र के रूप में आज भी विद्यमान है।

सन्दर्भ

1. भारतीय गजेटियर, उत्तरप्रदेश जिला गाजियााबाद 1999
2. मत्स्य पुराण, अध्याय 255/4
3. जे0सी0 घोष : इण्डियन कल्चर, पृष्ठ 347–51
4. डा0 रामलाल कंवल : प्राचीन मालवा में मन्दिर वास्तुकला, स्वाती पब्लिकेशन्स दिल्ली, 1984
5. साक्षात्कार पं0 सहदेव शर्मा जी पुत्र श्री रामचन्द्र शर्मा, उम्र–55 वर्ष
6. साक्षात्कार पं0 श्री विरेन्द्र पाण्डे पुत्र श्री सुरेश पाण्डे, उम्र–56 वर्ष
7. साक्षात्कार पं0 सतीश चन्द्र ब्रह्मचारी पुत्र श्री लीलाधर शर्मा, उम्र–72 वर्ष
8. साक्षात्कार श्री रमाकान्त पाण्डे, आयु–57 वर्ष
9. साक्षात्कार श्री राजसिंह (पूर्व प्रधान) कादराबाद, आयु 95 वर्ष
10. साक्षात्कार श्री जयभगवान जीनलाल वाल्मीकि पुत्र स्व0 श्री कालूराम, उम्र 50 वर्ष
11. साक्षात्कार डा0 देवेन्द्र शास्त्री पुत्र श्री भवानी दत्त शर्मा, आयु 60 वर्ष
12. चित्र–1 Devasthan Department Rajasthan